



विश्व मृदा दिवस आज

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो नागपुर द्वारा किए गए अध्ययन में हुआ खुलासा रासायनिक खाद व कीटनाशक के उपयोग से जैविक गुणवत्ता में आई कमी

उर्वरक क्षमता घटी : विदर्भ की काली मिट्टी में पोषक तत्वों का संतुलन गड़बड़ाया

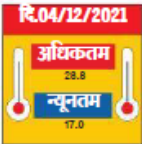


भास्कर संवाददाता | नागपुर

खेतों में किसानों द्वारा अत्यधिक रासायनिक खाद व कीटनाशक का उपयोग करने से मिट्टी की जैविक गुणवत्ता में भारी कमी आ रही है, जिससे मिट्टी की उर्वरक क्षमता लगातार घटती जा रही है। पोषक तत्वों की उपलब्धता में भी काफी कमी देखी गई है। खास तौर से विदर्भ क्षेत्र की काली मिट्टियों में पोषक तत्वों का संतुलन गड़बड़ा गया है, जिससे फसलों की उत्पादकता में बहुत कमी आ रही है। यह खुलासा राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो नागपुर द्वारा विदर्भ क्षेत्र की मिट्टियों के अध्ययन में हुआ है।

जस्ता व लोहे की कमी

पृथ्वी पर रहने वाले जैव-विविधता के 25% से अधिक का घर मिट्टी ही है। पृथ्वी पर जितने लोग रहते हैं उससे कई गुना अधिक जीवित प्राणी स्वस्थ मिट्टी में रहते हैं। मिट्टी में रहने वाले जीव पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए पूरे वर्ष बिन-रूत काम करते हैं। हमारे भोजन का 95% भाग मिट्टी से ही आता है। मिट्टी में पाए जाने वाले कार्बन को स्टोर करने में मदद करते हैं, हमारे विषम क्षेत्र की मिट्टियों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की भारी कमी देखी गई है। खासतौर पर जस्ता व लोहे की कमी उमरवार आ रही है। किसान मृदा में पोषक तत्वों का संतुलित प्रबंधन करें और मृदा की समय-समय पर जांच कराते रहे।



फसलों की उत्पादकता में भारी कमी, विदर्भ क्षेत्र में सूक्ष्म पोषक तत्व हैं कम

मृदा लवणता को रोके, मृदा उत्पादकता को बढ़ावा दें

मृदा (मिट्टी) के महत्व को लोगो और किसानों तक पहुंचाने के लिए हर वर्ष 5 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व मृदा दिवस मनाया जाता है। इसका मुख्य मकसद लोगों को मिट्टी के प्रति जागरूक करना है। विश्व मृदा दिवस पहली बार 5 दिसंबर 2014 को मनाया गया था। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मृदा दिवस एक खास विषय पर आधारित है, जो दुनिया को महत्वपूर्ण संकेत देता है। एच लोको के हित में होता है। विश्व खाद एवं कृषि संरक्षण के मुताबिक इस वर्ष वर्ल्ड सोइलटे 2021 की थीम है- मृदा लवणता को रोके, मृदा उत्पादकता को बढ़ावा दें।



विस्तृत अध्ययन

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो नागपुर द्वारा विदर्भ क्षेत्र की मिट्टी का विस्तृत अध्ययन किया जा रहा है। 1 मिट्टी की जानकारी प्राप्त करके सभी किसान इससे लाभान्वित हो सकते हैं। राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो (एनबीएसआरएस और एनयूपी) क्षेत्र का एकमात्र प्रमुख राष्ट्रीय संस्थान है जो मृदा सर्वेक्षण, भूमि उपयोग नियोजन और संबद्ध पहलुओं के क्षेत्र में अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण (आरटी एंड टी) के लिए अर्बिन्स है। वर्षों से ब्यूरो ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग नियोजन में आरटी एंड टी के केंद्र के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। संस्थान की उत्पत्ति राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में मृदा सर्वेक्षण की मांग्यता के बावजूद, देश में मिट्टी की प्रकृति, सीमा और वितरण पर जानकारी को आत्मसात करने, सत्यापित करने और प्रसारित करने के लिए एक केंद्रीकृत सूचना प्रणाली बनाने की आवश्यकता महसूस की गई।



विदर्भ क्षेत्र की काली मिट्टी के गुण

नागपुर के साथ-साथ पूरे विदर्भ क्षेत्र और मध्य भारत में मुख्य रूप से काली मिट्टी पाई जाती है, जो काली कपास मिट्टी या 'रेग्यूर' मिट्टी के रूप में भी जानी जाती है। काला नाम उस मिट्टी को दिया गया है जो बहुत गहरे रंग की होती है और सूखने पर बहुत सख्त हो जाती है और गीली होने पर चिपचिपी और प्लास्टिक हो जाती है, और इसलिए खेती और प्रबंधन करना बहुत मुश्किल होता है। ये मिट्टी भारत के मध्य, पश्चिमी और बहिष्णी राज्यों में प्रमुख रूप से वितरित है। इन मिट्टियों का पूरे भारतवर्ष में लगभग 76.4 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल है। कुछ काली मृदा का विकास तेजीस और स्ट्रिपेटिक पर्वत से हुआ है, जो मध्यम रूप से उथली (50-75cm) से मध्यम गहरी (75-100cm) होती है, जबकि वेस्टरिफिक पर्वत पर विकसित मिट्टी मुख्य रूप से बहुत गहरी (150cm) होती है, जिससे निचले हिस्से में कैल्शियम कार्बोनेट की उच्च मात्रा होती है। ये अत्यधिक चिकनी (30-80% क्ले) होती हैं। पीएच 7.8 से 8.7 के बीच होता है, जो सैटिक परिस्थितियों में 9.5 तक जा सकता है।

- डा. वी. पद्मदिवेदी, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो

फसल उत्पादन में प्रमुख बाधाएं

संकेतित मिट्टी की खोजों की उपस्थिति के कारण उनको उच्च विविधता क्षमता होती है। इन मिट्टियों में जल और पोषक तत्वों की धारण करने की उच्च क्षमता होती है। मध्य के कारण इन मिट्टियों में अत्यधिक और इत्यधिक प्रक्रिया कड़ी किस्म की होती है। काली मिट्टी के गीला होने पर विस्तार और सूखने पर सिक्कड़न के कारण उच्च घनत्व हो जाता है। मिट्टी का गहरा गल क्ले-ब्रूमस कॉम्प्लेक्स और टारटोपीटर्स मैग्नेटाइट खनिजों की उपस्थिति के कारण होता है। गीले होने पर वे अत्यधिक चिपचिपी एवं प्लास्टिक और सूखने पर बहुत सख्त हो जाती है। यह प्रक्रिया कृषि के लिए चुनौती करने के लिए समस्याएं पैदा करती है। इन मिट्टी में पोषक तत्वों विशेष रूप से सल्फर, फॉस्फोरस, सल्फर और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कम उपलब्धता होती है। चुनौती के लिए कम समय, कमजोर जल निक्षेप और कमी-कमी कमी की कमी पाई जाती है। मिट्टी का उपयोग भारत के मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों में कपास, बाजरा, ज्वार उगाने के लिए किया जाता है। सिंचित परिस्थितियों में इनका उपयोग गन्ना, गेहूं और विषुव कर्षण फसल के पौधरोपण जैसी कई अन्य फसलों के लिए किया जा सकता है।

- डॉ. आर. पी. शर्मा, वीरध वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो